
gomatIlaharI with Hindi and English Translation

गोमतीलहरी भाषा टीका सहित

Document Information

Text title : gomatIlaharI (bhAShATIkAsahita) with Hindi and English translation

File name : gomatIlaharIbhAShATIkAsahita.itx

Category : devii, nadI, devI, laharI

Location : doc_devii

Transliterated by : Mandar Mali aryavrutta at gmail.com

Proofread by : Mandar Mali, Preeti N Bhandare

Translated by : English Preeti N Bhandare pnbhandare at gmail.com

Latest update : November 27, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 22, 2022

sanskritdocuments.org

गोमतीलहरी भाषा टीका सहित



श्रीगणाधिपतये नमः ।

अये मातगोमत्यमलजलधारे तव गुणा-
नलं वक्रं नेशः कथमपि च शेषः शतमुखः ।
हरो वैषा यत्र स्फुरति नवगङ्गामृतलता
तदा कोऽहं मोहं गत इह समर्थस्तव नुतौ ॥ १ ॥

टीकाकारकृतमङ्गलम्-

नत्वा सरस्वतीमाद्यां वाग्देवीं सुन्दराननाम् ।
भावावलम्बिनी टीकां कुर्वे भाषामिदं स्तुतौ ॥ १ ॥

हे अमल जलधारवाली गोमति ! तुम्हारे गुणों को हजार मुखवाले शेष और जिन शिवजी के मस्तक पर अमृतलता गंगा बह रही है यह महादेवजी भी नहीं कहने को समर्थ हैं, तो मोह को प्राप्त मैं कौन हूँ कि तुम्हारी स्तुति करने को समर्थ होऊँ ।

Salutations to ganAdhipataye

Hey, crystalline water currents of the Gomati river! Even the thousand mouths of Shesha (a serpent) held by Shiva, are not enough to sing the praises of your many qualities. When Mahadeva, with the nectar-like waters of the Ganges flowing from the locks of His (Lord Shiva's) hair, is unable to voice your greatness then what about me who is bewitched by illusion. .. 1 ..

Commentator's propitiation

Before beginning this linguistic emotional commentary on the praises, the commentator bows to Saraswati and Vagdevi while taking their beautiful names. .. 1 ..

अहो मातर्गोमत्यमलजलसम्भारविलस-
त्तनुस्पर्शादर्शप्रहतखलजम्बालनिकरे ।
पुनीषे संसारं शमनशवसानं शमयसि
मनश्चैन्दं देवि त्वमिह सततं शङ्कितयसि ॥ २ ॥

हे मातः गोमति ! निर्मल जलभार से शोभित शरीर के स्पर्श अथवा देखने से दुष्ट पापसमूह के नाश करनेवाली तुम्हीं इस संसार को पवित्र करती हो और यमराज के मार्ग को रोककर निरन्तर इन्द्र के मन को शंकित करती हो।

Hey, Mother Gomati! With the sacred waters adorning your body, just a glimpse or touch is sufficient to destroy great quantities of sin, you indeed purify this world. You stop Yamaraj, the lord of death, in his tracks and constantly create doubt in the mind of Indra, the lord of devas. .. 2 ..

अलं गङ्गा सङ्गाद्विलुलिततरङ्गा स्मररिपो-

रपामीशः साक्षादखिलजगदाधारशयनात् ।

क्षये कल्माषानामिह तु महिमा कोऽपि भवती

मनालम्बःशम्बोऽस्तवननिकुरम्बः प्रथयति ॥ ३ ॥

महादेव के संग से चंचल तरंगवाली गंगा और जगदाधार विष्णु के शयन करने से समुद्र पाप नाश करने में समर्थ है किंतु हे गोमति ! आप में बिना आलंब कल्याणयुक्त जिसकी स्तुति नहीं है ऐसी कोई महिमा आपको विश्व में प्रसिद्ध कर रही है ।

The quivering tides of the river Ganga that accompany Mahadeva, and the ocean upon which Vishnu, the supporter of the Universe, rests - both are fully capable of destroying sins. But, hey Gomati, you without hesitation show your compassion and there are no words fit for paying tribute to you, yet your greatness is well-known in the whole world. .. 3 ..

अलं क्षोदीयांसः कलिलकलने धूर्जटिजटा

पुटे संस्थाप्लावमृततरतमस्काः कथमपि ।

परं मातगोमत्यगतिशमनग्रासपतिता-

नहं जाने द्राघीयस इह पुनानैव भवती ॥ ४ ॥

पाप करने में अतिक्षुद्र पापी महादेवजी के जटापुटस्थ गंगा में स्नान करने से कथंचित् निष्पाप हो परन्तु हे गोमति अंब ! जिनकी गति नहीं है और यमराज के ग्रास में गिरे हैं अथवा यमराज के ग्रासभूत जो बड़े-बड़े पतित हैं उनको मैं जानता हूँ तुम्हीं पवित्र करनेवाली इस संसार में हो ।

Even though the sins committed by the basest sinners are washed away by bathing in the flowing water of the river Ganga from Mahadeva's tresses, but, hey Gomati Ambe, I know that you are the only one in this world who sanctifies sinners by mere sight, all the more so

for those that have no escape from Yamraj's devouring grasp and, also save the most fallen sinner from being held hostage by Yamaraj. .. 4 ..

नदीनं का दीना विषमशरसङ्घातकृशिता
 नदी नन्दीनेन क्षणविहितविनापि न गता ।
 त्वमेवैकामुद्रा कुहकवधके पुण्यसलिला
 जनुर्बन्धासन्धे चरसि शुचि ब्रह्मव्रतमिह ॥ ५ ॥

कामदेव के विषम बाणों के समूह से जर्जरीभूत क्षण भर महादेव के विघ्न करने पर भी कौन ऐसी नदी है जो स्वपति समुद्र में न पहुँची, किंतु हे पापनाशिनि ! कर्मबीजों में अविश्वासिनि अर्थात् मोक्षपदे ! मुद्राभूता तुम्ही एक शुचि ब्रह्मव्रत को आज भी कर रही हो ।

Mahadeva was shaken by the group of ensnaring arrows shot by Kamadeva, the lord of love, but with His (Mahadeva's) power in a moment destroyed Kamadeva. And every river of her own accord reaches the ocean, but, hey destroyer of sins, you are the only chaste and holy one who presently holds the seal of authority to provide liberation from the distrustful seeds of karma. .. 5 ..

त्वमेवाम्ब ब्रह्मप्रथितकरकोत्पत्तिसुभगे
 विराजन्ती लोके क्षपितकलिशोके भगवती ।
 वियद्गङ्गानङ्गद्विषदमलसङ्गादिह तु या
 परा नाद्या सेयं प्रभवति हिमादेस्तटतलात् ॥ ६ ॥

ब्रह्मा के प्रसिद्ध कमण्डलु से उत्पत्ति के कारण मनोहर और कलिकाल के शोक नारा करनेवाली सौन्दर्य से विराजमान आकाशगंगा तुम्ही हो और महादेवजी का संबन्ध है जिससे ऐसे हिमालय से जो निकलती है सो दूसरी है आदि गंगा गोमती ही है । अथवा वह परा उत्तमा नहीं है और आदि की नहीं है ।

You are enchanting because you originated from Brahma's famous sacred pot, you dispel grief in the dark times of Kaliyuga, you are the one endowed with beauty of the celestial Ganges. The Ganges in relation to Mahadeva, of whom the Himalaya is the source, is different; you are none other than that initial celestial Ganges, Gomati. Neither is she (Mahadeva's Ganges) the absolute best nor the beginning source. .. 6 ..

बृहत्तीरे सन्तो जठरपिठरे प्राक्तनशुभा
 दलं याते नीरे किमपि शयितोद्बुद्धसदृशाः ।
 करस्थं ब्रह्माण्डं क्षणमिह तवाम्भः स्तुतिपराः

निरीक्षन्तो यान्ति स्थिरपदमथावृत्तिरहिताः ॥ ७ ॥

हे गोमति ! विपुल तट पर रागद्वेषादिशून्य जन प्राक्तनशुभ से तुम्हारे नीर को पेटरूपी पेटार में पडने से कुछ सोकर जागे से होकर तुम्हारे जल की स्तुति करते और ब्रह्मांड को करस्थ देखते हुए पुनः आवागमनरहित मोक्षपद को प्राप्त होते हैं ।

Hey Gomati! On the ample dual shores of love and hatred, the people who precede to hold your holy waters by cupping their palms nullify their contrasting dualities and somewhat awakening from their sleepy state begin singing praises of your waters. Beholding the Universe in their palms, thus, they again and again return to the path to salvation avoiding the stream of the relentlessly hampering traffic of emotions. ... 7 ..

किरीटं तैरीटं लघयति कृपीटेन रचयन्

मृदा भाले पुण्ड्रं जननि तव जानन्नपि जनः ।

यमालोक्य भ्रान्ता शमनपुरतः किङ्करगणा

अलक्ष्या वेपन्ते त्रिभुवनमहाराजभवने ॥ ९ ॥

हे मातः गोमति ! जाननेवाला मनुष्य इस संसार में तुम्हारे जल से मृत्तिका का पुंडू भाल में बनाकर सुवर्ण के किरीट को लघु समझता है जिस पुंडू को देखकर भ्रांत यमराज के किंकरगण यमराज से छिपकर त्रिभुवन महाराज के भवन में भी कांपा करते हैं ।

Hey mother Gomati! Knowledgeable people of this world take water from your river and mix with soil to draw a spearhead mark on their forehead; they believe a golden crown to be inferior to this. The demonic assistants of a perplexed Yamaraj, abscond on seeing this sign and find themselves trembling in the abode of Tribhuvan maharaja, the lord of the three worlds. ... 9 ..

ध्रुवं शंस्ता कश्चिन्निखिलसिकतागूढ कणिका-

स्तवस्याग्रेगूस्ते भवतु नतु मातः कथमपि ।

गुणागारं स्तोतुं तलिनपुलिने माहिनमलं

जलं देवो वाचामपि च विभुराचारनिरतः ॥ १० ॥

निश्चय करके हे मातः ! कोई भी स्तोता संपूर्ण बालू को छिपी हुई कणिकाओं की स्तुति करने में अग्रगामी हो, किन्तु हे पवित्र तटवाली गोमति ! गुणों के आगार पूज्य तुम्हारे जलों को आचारनिरत बृहस्पति भी स्तुति करने को किसी तरह भी नहीं समर्थ हो सकते ।

Any admirer making a resolution, hey mother, to become a frontrunner in complimenting you falls short because the compliments are just like hidden grains of sand in an entire

stretch of sandy shores – that is a few in countless. Likewise, hey holy shored Gomati, the innumerable worship-worthy qualities of your waters cannot in any way completely be praised by the auspicious preceptor of Gods, Brihaspati too. .. 10 ..

न के के ते तीरे सुलभविभवा वारिपथिकीं
मनोऽभीष्टिं लब्धा मम तु पुनरेषा बलवती ।
तमः पारावारात्सुरधुनि दरिद्रौघदमनि
प्रकुर्वीथाः पारं सदयकरमालम्ब्य जननि ॥ ११ ॥

हे सुरधुनि ! कौन कौन नहीं जलमार्ग से आई हुई मनोरथ को पाकर तुम्हारे तट पर सुलभ विभव हुए, परन्तु मेरी तो यही अभिलाषा अति बलवती है कि हे दरिद्रसमूहनाशिनि, मातः ! दुःखपारावार से दयापूर्वक हाथ पकड़कर पार कर दो ।

Hey melodious sounding river, there is no one who does not get fulfillment of their wishes after gaining your magnanimous favor when they wade through your waters! Hence, with deep longing I beseech you, hey remover of dire distress, please mercifully hold my hand and fetch me to your hallowed banks by helping me get across this grief-stricken existence. .. 11 ..

सदैव त्वत्तीरे निभृत निवसन्तं जनमिमं
त्वदाधारं जानन्त्यपि च निभृतिं यास्यसि यदि ।
निरालम्बः पन्थाः शरणभरणे किं च जननि
प्रथाविश्वासस्य स्वलति नितरां देवनिवहे ॥ १२ ॥

सदैव तुम्हारे तट पर एकान्त में बसते हुए इस जन को जो कि केवल तुम्हारे ही आश्रप है जानती हुई भी जो चुप हो जाओगी, तो हे जननि ! शरणागत के रक्षा करने का मार्ग निरालंब हो जायेगा और देवताओं के समूह में विश्वास की प्रथा अत्यन्त गिर जायगी ।

I, like many others, always sit alone to enjoy the solitude on your banks, though proffering nothing in return - like a bloodsucking leech, and yet knowing this you continue, hey mother, to silently render protection to all of us who surrender unto you and show us the path to be liberated. And if the group of Gods behave in the same manner as me, their credibility will fall immensely. .. 12 ..

समुल्लङ्घोद्वन्धं यमगृहविशालार्गलमिव
स्वनन्त्यः सद्भोरं विजयमिव लब्धा धवलितैः ।
पयः पूराकारैः स्मितमिव दधत्यः पतदपां

समूहैः पूतास्ते जननि विजयन्तां लहरयः ॥ १३ ॥

यमराजराज के भवन के विशाल अर्गला की भांति बन्धा को लांघ कर विजय को ऐसा प्राप्त घनघोर शब्द करती हुई दुग्ध के समान आकारवाले स्वच्छ जलसमूह से मंद हास को करनेवाली पवित्र मातः ! तुम्हारी लहरें सर्वोत्कर्षशालिनी हैं ।

In the abode of Yamaraj, the huge chains binding devotees fall away at the loud roar of your translucent clear waters and you allow the devotees to victoriously crossover the borders of hell while displaying your slight smile, O holy mother, no wonder your waves are most excellent and humbling. .. 13 ..

प्रहारं पापानामनवमविहारं क्षितिरुहां

समाहारं शुद्धेः रुचिरमतिहारं तनुजुषाम् ।

परीहारं व्याधेरपि च नवनीहारमुरसां

पयो वन्दे मातस्तव कलिलसंहारकमलम् ॥ १४ ॥

पापों के नाशक वृक्षादि के लिए उत्तम विहाररूप और शुद्धियों का समूह माणियों की रुचिर बुद्धि का हारस्वरूप व्याधि का निवारक संतप्त हृदय के लिये नीहार के सदृश समस्त कलिलविनाशक हे मातः ! तुम्हारे जल की वन्दना करता हूँ ।

Destroying a thicket of sins is an absolute pleasure trip for you, the assortment of gems of splendorous intellect at your disposal slash all the impenetrable vines of wasting ailments and with a misty spray of your waters soothe the singed and bruised heart, hey mother, I salute your waters. .. 14 ..

समायातपातस्तरुणतरुणीवृन्दमभितः

कृतस्नानं नीरं कलयति तवाम्ब क्षणमिह ।

चलन्नीलालीला ललिततरलव्योममुदिर-

द्युतिग्रामस्फारस्फुरदुरुविडौजोधनुरुचिः ॥ १५ ॥

प्रातःकाल आए हुए तरुण तरुणियों का समूह स्नान किए हुए तुम्हारे नीर को हे अम्ब ! क्षण काल के लिये चलायमान है नील वर्ण की जो लीला उससे ललित तरल आकाश में मेघों पर दीप्तिमूह से विपुल स्फुरते हुए पूर्ण इन्द्र के धनुष की शोभा के सदृश कर देता है ।

A group of young men and women who come to bathe in your flowing waters at dawn are inspired momentarily by the elegant, illustrated art of the brightening blue firmament, the glowing radiance over sailing clouds, and the perfect arc of an enchanting rainbow embellishing the skies. .. 15 ..

पतन्तीनामूर्धात् कथमपि समारुह्य गहनं
जटाजूटं शैवं विकृतपरिपाकादिह शुभे ।
त्वदीयानामम्ब प्रततलहरीणामथ च त-
न्नदीनामौपम्यं वदतु पशुपादन्य क इह ॥ १६ ॥

किसी तरह गहन शिव के जटाजूट को पाकर भी अशुभ परिपाक से ऊपर से नीचे को गिरती हुई
अध च अधःपतन को प्राप्त उन नदियों का और विस्तृत तुम्हारी लहरियों को पशुप के अतिरिक्त
पौर कौन बराबरी कर सका है अथ च शिव के अतिरिक्त और कौन कर सका है ।

Attaining access to the cleansing waters descending from the bearer - Lord Shiva's hair -
the inauspicious full-fledged degenerated and downtrodden persons (the forsaken ill-fated
downtrodden persons) are rinsed from top to bottom. Which river can match the force
of your waves who are the guardian of all civilians other than, additionally, Lord Shiva
himself? .. 16 ..

निमग्नानामन्तःसलिलमसकृत् केलिकलना
समासक्त्युन्मुक्तप्रवरकवरी कञ्जसुदृशाम् ।
अनुन्मेषोन्मेषैः त्रिदशतटिनी रौक्मविकचा
ससेवालाम्भोजदयुतिरिह विजिग्ये मुखमयैः ॥ १७ ॥

जल के भीतर निमग्न अर्थात् स्नान करती हुई और वार २ खेल में पास होने से जिनके केशपाश
खुल गए हैं और जल के ऊपर तैरते हैं ऐसी कमल के समान स्त्रीयों के मुखमय उन्मेष और
अनुन्मेषों से अर्थात् डुब्बी लगा कर मुखों के बाहर-भीतर करने से मन्दाकिनी के सुवर्णमय
विकसित सहित सेवार के कमलों की शोभा जीती जाती है ।

Maidens immerse themselves in your waters while bathing, frolic in the waters, causing their
braids to be undone, their tresses floating up on to the surface appear like the blossoming
of a lotus. Diving in and emerging from your waters repeatedly, the gently streaming water
on their glistening faces give them a golden glow and they can compete for beauty to win
along with the full-bloomed lotus that grows in murky waters. .. 17 ..

समुद्भूतेः सद्भावनतिहरपद्माश्रयवपुः
प्रवाहः सन्तानप्रतिभटपरिस्पर्धिनिविडः ।
पयः पूरः शूरस्त्रिविधभवभूतोत्थदलने
कथं कुर्यामम्बस्तवनमहमेकस्तव शुभे ॥ १८ ॥

सकल संपत्तियों का निवास अवनति के हरनेवाली लक्ष्मी का भी आश्रयवाला शरीर भी संतान के विघ्नों को नाश करने में दर जल जोकि तीनों तरह की सांसारिक व्याधियों के दलने में शूर ऐसे अनेक गुणवाली हे शुभे ! मैं अकेले तुम्हारी स्तुति कैसे कर सकता हूँ ।

The downfall of a person happens due to a deserting Lakshmi, the repository of all kinds of wealth, and who is a resort of safety of our progeny. This ruin is set aside by your streaming waters who also can remove the obstacles faced by our children, while you bravely annihilate the agonies of the three worlds. Hey auspicious One with so many good qualities how can I alone succeed in chanting your many acclaims? .. 18 ..

ध्रुवं व्यासङ्गस्ते स्फुरति शतशः पूर्णतटिनी
समाहारे पारे निभृतपतितोद्धारकरणे ।
अहं त्वेवं जाने कलिलकलनाशून्यमसकृ-
त्तमः पारे कर्तुं जननि जनमेनं प्रभवति ॥ १९ ॥

छिपे हुए पापियों के उद्धार करने में अपार सैकड़ों नदियों के समाहार याने समूह को स्फुरित होने पर भी जो तुम्हारे बहने का कारण है सो मैं जानता हूँ कि निश्चय कर पापों की गणना से शून्य अर्थात् जिसके दोषों की इयता नहीं है ऐसे मुझ पापी के तारने हेतु ही यह तुम्हारा व्यासंग है ।
Despite the collection of a hundred rivers with their sparkling waters the covert sinners seek your waters to be raised from their despicable state which I gather is the reason for you to flow. I most certainly know that the count of many sins is nullified to zero. In other words, I am lured towards your waters where my faults, which are countless in number, are redeemed and that nullification seems to be your main obsession and pastime. .. 19 ..

लिखेदेव ब्रह्मा निपुणमलिके रोषवशतो
लिपिं दुर्वर्णाङ्कां स्फुरतु पृतना प्रैतपतिकी ।
अहं त्वेवं शङ्कानिबिडरतिरङ्कोऽघनिचयं
तृणाय त्वं मन्ये जननि ननु जागर्षि यदिह ॥ २० ॥

रोषवश ब्रह्मा मस्तक में दुर्वर्णों के अंकों को लिखें और यमराज की सेना में, मैं तो ऐसी शंकारूपी घने प्रेम का रंक हूँ किन्तु पापसमूह को तुणवत् समझ रहा हूँ जिससे कि हे जननि ! तुम इस लोक में वर्तमान हो ।

The astute lord Brahma writes furiously on everybody's forehead their numerous faults and based on these writings Yamaraj creates strife for them. I understand my deprived state is due to the existence of my quiver full of faults and fiercely crave for the immense love that

you are abounding in, O mother, this is the only reason for your existence in this world. ...
20 ..

कपर्दी कल्याणि त्रिदशगिरिकोटिप्रतिहते
सरिन्नाथे जातं गरलमलिनाकाशमपिबत् ।
ततो माद्यन् वाहं वृषभमहिहारं शशिकलां
शिरस्यूरीकुर्वन्नधृत तव बुद्ध्या गिरिनदीम् ॥ २१ ॥

हे कल्याणि ! मन्दराचल की कोटियों से समुद्र को मथने पर भ्रमर के समान काला उससे हालाहल निकला जिसको शिवजी ने पी लिया बस तभी से उन्मादित होकर बैल को वाहन और सांपों को दार शशिकला को शिर में किया किन्च उसीसे तुम्हारे धोखे गंगा को धर लिया नहीं तो तुम्ही योग्य थीम् ।

Hey Kalyani, the poison Halahal – which is blacker than a bumble bee – emerged from the churning of the Mandar mountain in the ocean, it was drunk by Lord Shiva. Intoxicated, thus, he mounted his vehicle Nandi while donning the snakes around him, and the crescent moon on his head. Furthermore, by mistake he bore the Ganga River instead of you who is the more worthy one. ... 21 ..

धवित्रीं पापानां निरवधिसवित्रीं सुखभुवाम्
लचित्रीं वर्णानां कुविधिवशभाले विलसताम् ।
पवित्री चित्तानां सकलभुवनोद्धर्त्रि भवती
मलं स्तोतुं शेषोऽप्ययुतमुखभूषोऽपि न शुभे ॥ २२ ॥

पापों को दूर करनेवाली और निरवधि मुख के कारणों को पैदा करनेवाली कुभाग्यवश भालस्थ कुवर्णा की नाश करनेवाली मन को पवित्र करनेवाली हे सकल भुवन के उद्धारिणि ! तुम्हारी स्तुति करने को १०००० मुखभूषण शेष भी समर्थ नहीं है ।

You are the destroyer of sins, with the manifestation of your infinite mouths you devour the multitude of unfortunate prickly defects and thereby sanctify the minds, hey savior of the whole world, even ten thousand honeyed mouths are not sufficient to sing your praises.
.. 22 ..

अलं मन्त्रैर्यन्त्रैः कृतमपि जपध्यानलिभि-
वृथाकायक्लेशस्तपनकिरणैस्तापनविधौ ।
सुखं रे निःशङ्काः भ्रमत भववीथौ यदवधि
प्रभापूर्णा तिष्ठत्यवनितलमध्ये नृपवती ॥ २३ ॥

मंत्र यंत्र व्यर्थ है जप ध्यानबलि से क्या ? किन्च सूर्य की किरणों से शरीर संतान करना वृथा है , हे जनो ! निःशंक होकर मुख से संसाररूपी वीथी में घूमो अबतक प्रभापूर्ण पृथ्वीतल में गोमतीजी बहती हैं ।

Mantra, yantra are useless and what to say about chanting and intense meditation? Likewise, producing offspring by the benediction of the sun rays is not enough. Hey respected mother Gomati, without doubt you flow and meander through these maze-like plains of this blessed earth, all along dissipating the melancholic mirages of this world. .. 23 ..

निराधारो धाराधरिणि धरणी धूलिविलुठ

तनुस्तृष्णा कृष्णस्तरुणकरणे सैष कृपणः ।

समुद्धर्त्र्या भर्त्र्या सकलजगतामीशि कथ-

मप्यथोपेक्ष्यो गोमत्यनवरतभवदाशः प्रणयवान् ॥ २४ ॥

हे धारा को धारण करनेवाली ! निराधार और धरणी की धूलि से धूसरित शरीरवाला जो तृष्णा से कुष्ण हो रहा है ऐसा यह कृपणजन हे पूर्ण करुणावाली ईशि ! सब संसार का उद्धार करनेवाली आप द्वारा कैसे उपेक्ष्य हो रहा है जब कि तुम्हारी आशा और प्रणयवाला है ।

Hey donner of the flowing currents! Like the helpless and destitute, whose body are covered with the dust and grime and who has turned dark due to dehydration, such a thirsty person is standing before you. O goddess - brimming with so much kindness, I am hoping, yearning and with the expectation of being revived, rescued, and raised from this world by you. .. 24 ..

दिनस्यान्ते विद्युज्ज्वलनप्रतिबिम्बद्युतिमिषो-

लसन्नेत्रानन्त्यक्षणसुरपुरालोकविलसत् ।

लुठन्नक्राचक्रोडुमरवमत्स्यध्वनितटे

चलद्यान ध्वान धनितमधिवन्दे तव जलम् ॥ २५ ॥

सायंकाल बिजलियों के जलने से प्रतिबिम्ब द्युति के व्याज से विकसित अनेक नेत्रों से आनन्दपूर्वक आकाश के आलोकन से विलसित और लोटते हुए ग्राहसमूह से वृद्धिगत शब्द और मत्स्यध्वनिवाले किञ्च तट पर चलते हुए मोटर आदि यानों के ध्यान से ध्वनित कहे गर्जते हुए तुम्हारे जल को प्रणाम करता हूँ ।

In the evening, I am greeted by numerous eyes reflecting the light from electric bulbs which mirror the twinkling of the star-spangled joy permeated night sky. And the rising sound of words of returning residents to their homes are like the splashing sounds of fishes I hear

walking on your banks. The sound of various automobiles mingles with your roaring water, I salute these gurgling waters. .. 25 ..

तपस्यन्तः सन्तः कति न गिरिमन्तःप्रणयिनः
 कियन्तो जुह्वन्तो जगति मतिमन्तः सुरपुरीम् ।
 समुज्झन्त्यो शन्तस्तरलललनाभोगमिह तु
 प्रसादात्ते मातर्द्वयमपि सुखादाप्यमनिशम् ॥ २६ ॥

कितने नहीं संत प्रेम से पर्वतों में तपस्या करते हैं और कितने नहीं हवन करते हुए बुद्धिमान् मुरलोक की इच्छा करते हुए इस संसार में सुन्दर ललनाओं के भोग का परित्याग करते हैं किंतु हे मातः ! तुम्हारे प्रमाद से ये दोनों पदार्थ सुख से मात हो सकते हैं ।

How many saints love to perform penance on the mountains, and how many abandon enjoying the beautiful dalliances in this world with the hope to avoid the demon Mura and reach the abode of the wise Vishnu – the vanquisher of Mura, by the performance of fire oblations! But hey mother, the desires for the two types of material pleasures can be overcome just by pleasing you. .. 26 ..

समालम्बालम्बःसुललितविसाम्भोजहसितं
 लसच्छम्बं कम्बप्रणयिनिकुरम्बप्रणमितम् ।
 वलद्दम्भोदद्दं भोलिगणयुतशम्भोरपि परं
 हरत्वं भोऽम्बाशु प्रतनु मम जम्बालमखिलम् ॥ २७ ॥

भो अम्ब ! समालम्बन के लिए पर्याप्त और सुन्दर मुणालवाले अंभोजों का जिनमें हास है कल्याण से शोभित भाग्यशाली भक्तसमूहों से प्रणमित विसृतदंभ के लिये प्रचंड वज्रस्वरूप गणों से युक्त शंकरजी से भी उत्तम जो सूक्ष्म तुम्हारा जल है सो शीघ्र मेरे संपूर्ण पाप का नाश करे ।

Oh Ambe! You provide adequate support with your beauteous providential glittering currents for the ones lacking in prosperity; such fortunate group of your devotees are blessed with well-being. Your prominent thunder bolt like roaring waters are even more powerful than the fierce lightning bearing attendants of Lord Shiva, so please destroy quickly with surgical precision all my sins. .. 27 ..

प्रयच्छन्त्यातङ्कं सुतनु ननु दण्डायुधभृते
 विलोकन्ती लोकं धरणिवति भक्ताय सततम् ।
 दिशन्ती कल्याणं सकलभुवनव्यापि महिमे
 नयस्याख्यां स्वीयामसितसलिलेऽन्वर्थपदवीम् ॥ २८ ॥

हे सुन्दर शरीरवाली गोमति ! [वज्ररूपार्थ] से यमराज के लिए भव को देती हुई [पृथ्वीरूपार्थ से] हे धरणीयुत संसार को [दृष्टिरूपार्थ से] देखती हुई भक्तों को कल्याण देती हुई [दिश्यूपार्थ से] हे सकल भुवन में व्याप्त महिमावाली स्वच्छ सलिल से पूर्ण तुम्ही अपने नाम को अनुगतार्थ करती हो ।

[दिग्दृष्टिदीधितिस्वर्गवज्रवाग्वाणवारिषु भूमौ पशौ च गोशब्दः]

O beautiful-bodied Gomati! You steer your devotees residing on this earth away from Yamaraj's noose with your [form of lightning]. O flowing river on the [surface of the earth], with your ever [watchful gaze] you look after the welfare of your devotees. As your pure waters flow in [many directions] so does remarkable words of your glorious greatness spreads all around this gross world. .. 28 ..

तमस्तोमं रोमोल्लसितमपि सान्द्रं निगलितुं
यदेतत्तेऽच्छाम्बु त्रिदशतटिनीन्दुप्रतिनिधि ।
समूलं सङ्गूढं तदिह मम पापद्रुममहो
परिस्यूतं चित्ते तटमिव मुजङ्घन्तु जटिलम् ॥ २९ ॥

हे त्रिदशतटिनि स्वर्गनदी रोमों में लगा भी यह निर्मल तुम्हारा जल घन जो पापरूपी अन्धकार को भक्षण करने के लिए चन्द्रमा का प्रतिनिधि है सो चित्त में उत्पन्न दिये हुए समूल जटिल मेरे पापद्रुम को तट की नाई नाश करे

Oh divine-shored heavenly river, your holy waters swallow the shadowed sacrilegious wickedness very much like the moon devours the inky darkness of the night. The many thorny thickets created by my sullied deeds are uprooted from my consciousness by your curved banks like the hair is shorn by the arc of the blade of a barber. .. 29 ..

अहो चञ्चूर्षि त्वं चरमपतितत्रात्यवलयं
समुद्धतुं कर्तुं कुहकमहमेवं दिनचयम् ।
व्यतीतं नो विद्धो नहि तु तव मेऽपि प्रतिपलं
विधातुः स्यादायुस्तदिदमवसाने स्मरसि मे ॥ ३० ॥

अहो गोमति ! तुम अत्यन्त पतित जातिच्युत जनों के समूह को उद्धार को निमित्त और में पाप करने के निमित्त भ्रमण करता रहता हूम् । इस तरह निज २ व्यापार में हम दोनों की बीती आयु मालूम नहीं हुई, नहीं तो तुम्हारा और मेरा प्रतिपल ब्रह्मा का आयु हो जाता सो यह मेरे मरने बाद मालूम होगा ।

Oh, renowned one! You wander around with the intention to uplift the group of most degenerate class of people belonging to the lowest caste, while I roam around with the intention of committing sin. Since from when both of us have been continuing in our respective ventures is not known. If each moment of ours can be cumulatively counted then we could possibly obtain the age of Brahma, the creator. All this will be revealed consequent to my death. .. 30 ..

किमुक्तासंयुक्ता पतितजननिस्तारणविधौ

भवत्यंहः सङ्घाहरणशरणः केन च जनः ।

अलं शङ्कातङ्कैः प्रकृतिबलमूलो विधिरयं

ततो दध्वःस्वे स्वे जननि ननु कर्मण्यभिरतिम ॥ ३१ ॥

किसके कथन से पतित जनों के निस्तारण में तुम युक्त हो और हे भवति ! किससे प्रेरित होकर मनुष्य पापसमूहों के अर्जन करने में शरण लेता है इस विषय में शंकाभय था है यह विधान प्रकृतिबलमूल है अर्थात् स्वाभाविक है इससे हम दोनों निज निज कर्म में अभिरुचि धारण करें ।

You dispose away sins of people by whose command and by which ordinance? Who has inspired you, dear becoming one, to dissolve the heaps of sins of those who have taken refuge in you? Without a shred of doubt this ordinance was brought into force strongly based on the rules of the natural law. And so obviously, we each act based on our own separate interests and according to our individual personalities. .. 31 ..

मयन्तः शुन्धत्या निरयशतवर्त्मैलितपयः

प्रभावर्द्धे मातर्मनुजमनुजादा अपि गुरोः ।

ब्रजन्तस्तल्पान्तं तदपि पुरुहूतश्रुतपुरे

सुखं तन्वङ्गीनां कुचकलशगूढाः शेरत अमी ॥ ३२ ॥

हे मातः! नरक के सैकड़ों मार्गों को जाते हुए गुरुदारगामी भी अतएव मनुष्यरूपी राक्षस पवित्र करनेवाली आपके जल प्रभाव से इन्द्र के प्रसिद्ध नगर में सुखपूर्वक तन्वागियों के कुचकलशों में छिपे हुए यह लोग सोते हैं यह अपूर्व ही कृपा है ।

O mother, the hundreds of pathways to hell are paved with your waterways. As the human form of demons pass by these through the gateway of Guru's guidance, your waters sanctify them changing their course towards the land of happiness ruled by Indra. Thus, hiding like babies within this blissful bosom they sleep contentedly by your grace. .. 32 ..

जलज्वालकोधः श्वसितमिह ते यस्तनुभृता-
 मलं हृद्यं सद्यो मुषितमिव कुर्वन् प्रहरति ।
 मरुल्लोलालीलालहरिलतिकानां व्यतिकरा
 दहो मातर्नूनं भवति स कृतान्तोऽपि शमनः ॥ ३३ ॥

जल रहा है ज्वाला के समान क्रोध जिसका ऐसा यमराज भी अर्थात् (कृतान्त) भी जो कि पाणियों के अत्यन्त प्रिय प्राणों को चोरी ऐसा करता हुआ प्रहार करता है, हे अंब ! सो भी वायु से लोल है लीला जिनकी ऐसी तुम्हारी लहरियों के संसर्ग से कृतान्त न होकर शमन हो जाता है, अहो आश्चर्ययुक्त तुम्हारा जल है ।

One who is raging with fury like a volcano, such a dogmatic Yamaraj stealthily steals the dearest possession of all - that of life - of those living beings thereby killing them. Hey Ambe! Like the gust of a gently blowing breeze soothes, so does associating with your waves allays the built-up anger of Yamaraj, such are the wonders of your waters. .. 33 ..

प्रवाहैरम्भोजप्रसविनि समालोकनयुषां
 क्षिपन्त्यादुर्दान्तं वृजिन दलमानन्दनिलये ।
 ध्रुवं मन्ये मातः श्रवणबुधितैकस्थितिजुषां
 जरीहर्तुं पापं तव लहरिमालाकलकलः ॥ ३४ ॥

हे कमलों के पैदा करनेवाली ! मैं यह मानता हूँ कि प्रवाहों के द्वारा देखनेवालों के दुर्दान्त पापदल को नाश करने वाली हो हे आनन्दनिलये ! केवल श्रवणमात्र से ज्ञानवालों के पाप हरने को यह तुम्हारी लहरियों की मालाओं का कलकल है ।

O Gomati, your waters are capable of growing lotus flowers! I do earnestly believe that by just looking at your flowing waters any viewer is able to control the unbridled passions coursing through their self. O giver of happiness! Also, just by listening to the babbling currents of yours is like hearing the holy chant with a rosary. For the knowledgeable persons this hymn-like sounds help to successfully quell many of their amorous desires. .. 34 ..

अलम्भ्योको लोकैरपि न खलु कैस्कैः क्रतुभुजा-
 मलम्भ्योको लोकैः सुकृतकुक्कृताभ्यामिह परम् ।
 वयत्वेवं विद्मो न खलु भवती यत्र वहति
 प्रपञ्चस्तत्रत्यस्तटिनिसमुपावर्णि कविभिः ॥ ३५ ॥

किन किन लोगों करके देवताओं का पुर नहीं प्राप्त किया गया और किन २ करके नहीं अत्यन्त भयानकभवन जो नरक लोक है प्राप्त किया गया उसमें हेतु अपने २ पुण्य पाप ही हैं परन्तु हम

तो यह जानते हैं कि यह स्वा-नरक का विभाग जहां पर आप नहीं हे वहीं पर का कवियों ने वर्णन किया है ।

By praying to any God, it is possible to reach their abodes, and behaving in a bad manner inevitably makes one to reach the extremely horrifying hellish world. Both these destinations are decided by their respective counterparts of good and bad. This division of good and bad do not matter in the least to you, as you treat all with equal benediction and is described by poets when they are away from you. .. 35 ..

अलं भ्रामं भ्रामं श्रमितमचलामण्डनिकरे
 वितण्डा खण्डाङ्गं प्रततयमदण्डाश्रयतनुम् ।
 कृपापूर्णापाङ्गैरहितविषयासङ्गपतितं
 परिष्वङ्गे कर्तुं जननि जनमेनं नहि परा ॥ ३६ ॥

खुब अच्छी तरह घूम-घूम कर पृथ्वी को इस ब्रह्मांड में थके हुए वितण्डा का पूर्णरूप और अहित विषयों के आसंग में गिरे हुए अत एवं विस्तृत यमदण्ड के आश्रय तनुवाले इस जन को अपने कर में करने को हे मातः ! तुम से दूसरा नहीं है इससे कृपाकटाक्ष करो ।

Wandering all over the earth, the world-weary ones are entangled in a variety of ways with disreputable company and conducting harmful activities. These vast number of people are punishable by the edicts of Yamadev, the lord of death. Such is my plight too and I sincerely seek from you the only one in this world who is so merciful to save me and grant me shelter from my many transgressions. .. 36 ..

भवादारभ्याहो यदवधि न बुद्धिस्थितिरभू-
 दहं शर्मागारस्तदनु विलसत्यम्ब जगतः ।
 प्रपञ्चे चिन्ताभिस्तटिनि सहसा जर्जरतनुं
 वरीभर्तुं चाद्य त्वमिह मिलितासि प्रणयतः ॥ ३७ ॥

जन्म से लेकर अबतक कि ज्ञान नहीं हुआ मैं अपने को कल्याणों का आश्रय समझता था उसके बाद जब ज्ञान हुआ और संसार का प्रपंच अज्ज्ञांभित हुआ तो शीघ्र ही यह जन जर्जरतनु हुआ है आज उस जीर्ण शरीरवाले जन को भरण करने को हे अंब ! तुम प्रेम से मिली हो ।

From birth and until now I felt that I could take refuge in my own self, rely on my own abilities. Afterwards when faced by the diverse unpleasant circumstances of the world, I rapidly learnt and was shocked to discover my own inadequacies. And you have made good

these disabilities of this wretched person ever since I have met you, O Ambe, with such loving kindness. ... 37 ..

अलं ते वल्गन्तामनवसितवल्गायत इमे
मुधा देव्यो देवा हरिहरभवानीप्रभृतयः ।
मुहुः काले काले विषदमनुभूयाम्ब पुस्त-
स्तदेतेषामागाममितकरुणे तेऽद्य शरणम् ॥ ३८ ॥

व्यर्थ ही हर हरि भवानी आदिक देवी देवता गर्व से भरे रहैं और डींग पीटैं कि हमी हैं जो हैं क्योंकि उनके कुछ लगाम तो लगी नहीं है परंतु बार २ इन लोगों के शरण में रहकर हे मातः ! मैंने विपत्तियों का अनुभव किया इससे अब हे अमितकरुणे ! इस समय मैंने तुम्हारी शरण ली है ।

In vain have many gods and goddesses, like Har, Hari, Bhavani, etc., boasted that due to their grace the various difficulties are reined in and removed. I have tried seeking their protection; however, I am still beset with problems and continue encountering obstacles. That is why as a last resort I have come to you, O immeasurably compassionate one. ... 38 ..

दलत्यामम्बैषां त्वयि हि जनतापं परिभवा-
दकूपारे शेते निभृत इव विष्णुः स्मरहरः ।
अलक्ष्यो लक्ष्यादहह ननु विक्षित इव सं-
वसानः सर्वाशा भ्रमति मृतभूमिष्वविरतम् ॥ ३९ ॥

हे अंब ! जिनके पापों को विष्णु और शिव नहीं दूर कर सके उनके पापों को जब तुम दलन करन को उद्यत हुई । तो परिभव से विष्णु जाकर छिपकर समुद्र में सोने लगे और महादेव लज्जा से अलक्ष्य होकर पागल की नाई नंगे शरीर स्मशानों में घूम रहे हैं ।

O mother! Those sins that neither Vishnu nor Shiva could eradicate you so eagerly grind them away and with so much enthusiasm. As a result, ashamed of their failure, first Vishnu hides away by sleeping in the ocean and then Mahadev, naked and crazed with mortification, wanders the graveyards. ... 39 ..

निरस्यन्ती पापं सकलमनिरस्यं यदितरै-
रमूनीशानादीनशितवलिभोज्यान् स्थितिजुषाम् ।
त्रपत्यप्यन्तस्त्वं गलितदृढ दर्पान् विदधती
समालम्बस्वाम्ब स्वजनमनुकम्पार्द्रहृदये ॥ ४० ॥

जिस पाप को दूसरा नहीं दूर कर सकता उन पापों को दूर करती हुई तुम इन विश्वासी भक्तों की पूजा और भोजनादि स्वीकार करनेवाले ईशानादि को स्वयं लज्जा करती हुई भी अहंकारशून्य करती हो, हे अंब ! अनुकम्पा से आद्रहृदय अपने- इस जन को ग्रहण करो ।

You help your faithful devotees who pray to you and offer many delicious palatable foodstuffs. While you accept these, you at the same time obliterate the sins which no one else is capable to destruct. Those who claim that they are capable but are unable to remove the sins, you humiliate them and make them humble by destroying their ego. O mother with such a soft heart! Please take pity on me and accept my tribute. .. 40 ..

उपालम्भारम्भे निरतमितरेषामविरतं

निरालम्बे सत्यप्यनवधिमदोद्रेकनिलयम् ।

तथाप्युरीकर्तुं जननि जनमेनं परिकर-

स्वदीयं वात्सल्यं प्रथयति समस्तेऽवनितले ॥ ४१ ॥

अन्यों की निंदापूर्वक भाषण में हमेशा लगे हुये और आलंब न होने पर भी अखण्ड अहंकार का गृहरूप ऐसे भी इस जन को स्वीकार करने में तुम्हारा यह परिकर समस्त भूतल में तुम्हारी वत्सलता को प्रकाशित करता है ।

Many are engaged in baseless blasphemous speech with support from their reinforced concrete like ego. Even to them you do not deny your illuminating presence and accept them unconditionally. On this entire earth there is no one other than you who does this so endearingly and show so much tenderness towards Her devotees, O Gomati. .. 41 ..

मुकुन्दोऽप्यासीनो विपुलभवने भार्गवकृते

यदन्तर्ब्रह्माण्ड लुठति सहसोदम्बरनिभम् ।

समाकाङ्क्षी नित्यं भवति यदपां लक्ष्मणपुरे

हरत्वेनः सेनां मम तु खलु सा काष्ठपुलिनी ॥ ४२ ॥

जिन मुकुन्द के उदर में यह समस्त ब्रह्माण्ड सहसा गूलर फल की भांति लोट रहा है वह मुकुन्द भार्गववंशीय श्रीप्रयागनारायण के विपुल मंदिर में बैठे हुए जिस गोमती के जलों की निरंतर आकांक्षा करते हैं वह लखनऊ काठ के पुलवाली गोमती मेरे पापों की सेना को दूर करें ।

The Mukund, in whose stomach the whole universe rolls like a sycamore fruit, that Mukund who is the descendant of the dynasty of Bhargava, sits on the banks of the Gomati river in the opulent temple, known as Shri Prayag Narayana, situated in Lakshmanpur (now Lucknow). His aspiration and constant prayer to your waters is to enable Him to cross over

after destroying the army of sins ruthlessly chasing Him by using the wooden bridge that has been built on your river. .. 42 ..

स्फुरश्चिन्तामत्स्यप्रबलविषयग्राहजटिल-
 प्रथान्यञ्चं चञ्चत्कुहरलहरीपूर्णमसकृत् ।
 पुनीथा निस्यन्दैरमृतकलकल्लोलजनितै-
 र्जडप्रायं मातर्जननदमगम्यं निजतया ॥ ४३ ॥

जिसमें चिन्तारूपी मत्स्य है और प्रयल विषयरूपी ग्राह है जटिल प्रथा से नीचे जानेवाले और जिसमें विघ्नरूपी चमकती लहरिया वार २ पूर्ण हो रही है ऐसे जडभाष अथ च जलप्राय इस जननद को अपना जातीय जानकर अमृत से सुन्दर कल्लोलों से उत्पन्न निस्यन्दों से अगम्य को पवित्र करो ।

In one whom the shoal of worries, like a school of fish, clamor, such a person is weighed down with unbidden oppressive anxiety. This unhappy state of circumstances develops into a vicious habit like the rising and crashing of waves that are continuously throwing obstacles at regular intervals. Such a person who is completely paralyzed due to the binding chains of abject shackling traits that seem insurmountable is looking forward to being purified by the magnificent nectar gushing forth from your hushed waters. ...43 ..

भुजङ्गेशः शेषोऽप्यथ च गिरिजेशस्तव नुतिं
 विधातुं लोकेशः कथमपि न कर्मठ्यमगमत् ।
 तदा कोऽहं जन्तुर्जननि जगतीरत्नलतिके
 ह्यलङ्कर्मिणः स्यामहह भवतीं स्तोतुममले ॥ ४४ ॥

सर्पाधिराज शेष और महादेव ब्रह्मा भी जिस तुम्हारी स्तुति करने को समर्थ नहीं है तब में कौन जन्तु हूँ कि हे भूतल में रत्नलतारुप मलरहित तुम्हारी स्तुति को अलंकर्मिण होऊ ।

When the king of snakes, Shesha or Mahadev or Bramha are incapable of singing your praises adequately, then how can one expect me, an insignificant creature on this earth, to lay a foundation of the many accolades of your gem studded glittering waters that are devoid of any form of impurity? .. 44 ..

जुगुप्सन्तः पापादवनिविरमन्तः श्रुतिधरा
 निलीयन्ते लोकादवनितलजातां भगवतीम् ।
 अजानाना एके वयमिह तु कल्पद्रुमशतं
 समं न्यक्कुर्वन्त्यां त्वयि जननिलीयेमहि मुखम् ॥ ४५ ॥

हे रक्षण करनेवाली ! वैदिक जन कोई २ संसार में पाई हुई आपको न जानते हुए पाप से अलग होते हुए संसार से लिपटे हैं हम तो एक दफे में भी सैकड़ों कल्मषों को तिरस्कार करनेवाली आपमें हे मातः ! सुख से लीन हो रहे हैं ।

O protector, the people who are well-versed in the vedas and lead a virtuous life while being wrapped-up in this world of duality are, alas, ignorant about you. We, on the other hands - the dregs of society, who are morally polluted due to the presence of hundreds of deplorable qualities are swathed in happiness, o mother, thanks to your blessings. .. 45 ..

दिशन्ती कामानां कृदरजठरामङ्गलमयी-

मनाहृत्यावद्या यदिह कृपणानङ्गकुनृपान् ।

समर्थन्तेऽर्थन्तां मम तु खलु शूलं बुधवरा-

व्रजन्तो लोकेशीं कथमयि न नाथन्ति कुधियः ॥ ४६ ॥

मनोरथों को देनेवाली मंगलमयी आपका अनादर करके निन्दित पेटू लोग यदि मूढ राजाओं को याचते हैं, तो याचे पर मुझे तो शूल यह है कि विद्वान् लोग जाते हुए दूसरों के यहां कुबुद्धि क्यों नहीं तुम्ही से याचना करते हैं ।

O fulfiller of desires, if the offensive greedy people dishonor you and instead pray to foolish kings for removal of their problems, let them be so. However, I fail to understand and sharply speculate over why the learned scholarly people are stupid enough to go to others and not seek refuge in you. ... 46 ..

लसच्छन्दोवन्द्यां परमरमणीयां गुणगणैः

रसालङ्काराढ्यां धिशतसमेतां शुचिपदाम् ।

सुरीतिं सदवर्णां विलसदभिधेयां तव तनुं

नुमोलक्ष्याच्छाभां सरसकविकृतां कृतिमिव ॥ ४७ ॥

जिसमें छन्द के समान बंधा बंधा है अन्यत्र सुन्दर जिसमें छन्दों का बंध है और गुणसमूह से परमरमणीय-अन्यत्र माधुपादि गुणों से सुन्दर जल की शोभा से पूर्ण-अन्यत्र रस शत्रङ्गार आदि और उपमादि अलंकारों से आढ्य सैकड़ों ध्वनि अर्थात् शब्दों से युक्त अन्यत्र व्यंग्यपूर्ण पवित्र स्थानवाली, अन्यत्र शुद्ध पदवाली, सुन्दर रीति धारावाली, अन्यत्र सुन्दर न्यासवाली, सुन्दर वर्णवाली अन्यत्र सुन्दर अक्षरवाली, सुन्दर नामवाली, अन्यत्र रुचिर अर्थवाली लक्ष्य शोभावाली, अन्यत्र लक्ष्यार्थ से सुन्दर प्रभावाली हे भगवति ! तुम्हारी तनु को सरस कवि की बनाई कृति के समान प्रणाम करता हूम् ।

Many poetic verses are strung with a collection of extremely delightful phrases about your various qualities. The verses are adorned with an elixir that is laced with such great sweetness about your most sacred and holy waters that sanctify the several places you come in contact with. The hundreds of melodious sounds, like the many jeweled ornaments, woven in each verse exemplify your wonderful virtues - the way your pure water flows, the many types of your trustworthy currents. The beautiful syllables, alphabets, names, interesting word meanings contained within each verse creates such an august impression about you. Hey Bhagavati, I salute these fascinating poems composed by poets in praise of you. .. 47 ..

कचित्कञ्जालीढोल्लसितविसिनीवृन्दविलस-
 तट कल्लोलात्तं तव मृगविहङ्गादिप्रसृतम् ।
 परिच्छन्नं नानामुनिजनकदम्बाङ्कितमिदं
 समाचङ्घायान्मे जननि भवजम्बालमखिलम् ॥ ४८ ॥

कहीं कहीं कंजों से उल्लसित कमलिनियों के वृन्द से विलसित और लहरों से गृहीत मृग विहंगादि से व्याप्त भांति २ के मुनिजन समूहों से अंकित और पूर्ण हे गोमति ! तुम्हारा तट मेरे संसारिक संपूर्ण पाप को नाश करें ।

Here and there a cluster of lotuses are ecstatically floating over your waters, while a herd of deer are enjoying the lull of your gentle waves. Like these two groups, brethren of monks, pepper your shores, who are completely soaking the all-pervading tranquility cloaking your banks. May your shores eradicate all my worldly sins. .. 48 ..

तवाम्भः शम्भ्वादित्रिदशगणसम्भावितमिदं
 भृतं भाले भक्त्या भवति भवजातरिह न येः ।
 बृहल्लोलापाङ्गैस्थ च लसदम्भोजरुचिह-
 च्छयैरैतैलाभः क इह जननि प्रापि जनुषा ॥ ४९ ॥

शंभु यदि देवतागणों से बंदित तुम्हारा जल संसार में आए हुए जिन लोगों करके भक्ति से भाल पर नहीं धारण किया गया, बड़े बड़े चंचल नेत्रवाले और कमलकी रुचि हरनेवाले हाथों से युक्त भी उनलोगों करके जन्म पाकर हे गोमति अम्ब ! क्या फल पाया गया कुछ भी नहीं ।

Lord Shambhu (Shiva) along with the many Gods are bound to remember your great waters. Many people who have come within the proximity of your grand waterways are granted an opportunity. However, their devotion remains untested on the razor-sharp point of a spear

and their fickle eyes wander about. Even though their hands hold an irresistible lotus, if they do not revere you, O mother Gomati, what is the point of their birth which is all but in vain! .. 49 ..

मुधा सौधं धाम त्वरितमयि मातर्हतधिया
विहायायाच्यन्तद्रविणमदमूढाः क्षितिभुजः ।
तदेतत्पापानामविकलफलाभोगनिरतं
निरीक्ष्याम्बाशु त्वं शमय मम मन्तूनथ शुभे ॥ ५० ॥

जल्दी से व्यर्थ ही अमृतमय धाम छोड़कर हे मातः ! इतबुद्धि मुझेसे धन-मद से मूह क्षितिष याचे गये । सो उन पापों के संपूर्ण फलों के भोग में लगे हुए मुझे देखकर हे शुभे ! मेरे अपराधों को शान्त करो ।

Futilely leaving your nectarine abode in haste, hey mother, this intellect of mine was clouded by a foggy haze of the wealth and power of foolish rulers. You are seeing, o mother, those mistakes are bearing fruit I am paying for those presently in full, so I entreat you to forgive me and then pacify my transgressions. .. 50 ..

स्पृहा लोकेनाम्ब क्षणमपि ममानर्व्यरचित-
व्यथाशोकाम्भोधिब्रुडिततनुषोविक्लवभृतः ।
तदेतत्संयम्य प्रततलहरीमञ्जलिपुटं
समायाचे मातःशिथिलयतमां संसृतिभिमाम् ॥ ५१ ॥

हे अम्ब ! मुझे इस संसार से अथ बिलकुल प्रेम नहीं है इससे अमूल्य हृदय प्रियवस्तु के नाश से शोकरूपी सागर में जिसका शरीर बूढ़ा है और हर वक्त व्याकुलता से पूर्ण इस जन की संसृति को अर्थात् संसारबन्धन को शिथिल करो यही हाथ जोड़े प्रार्थना कर रहा हूम् ।

Dear mother, I have no love remaining for this world anymore. My aged body is aware of my irreplaceable invaluable heart which is drowned in this grief-stricken ocean and every moment is filled with great anxiety. With folded hands my prayer to you is to mend these tendencies of mine and, thereby, relax my worldly bondages. .. 51 ..

लभेदर्थी स्वार्थं सुतमपि सुतार्थी स्तुतिमिमा-
मयीधानः शत्रून् जयति विजयार्थी प्रतिदिनम् ।
कृतं व्यक्त्या सिद्धिं दिशति नहि काङ्क्षामियमहो
भुवं प्राप्तां शश्वद्धजत ननु रे कल्पलतिकाम् ॥ ५२ ॥

इस स्तुति को प्रतिदिन पढने वाला यदि धनार्थी है तो धन को और सुतार्थी सुत को प्राप्त होता है । विजयार्थी शत्रुवों को जीतता है प्रकाश करना व्यर्थ है यह कौन कौन सिद्धि को नहीं देती, रे जनो ! पृथ्वीतल को प्राप्त इस कल्पलतारूपी गोमती का सेवन करो ।

Any person who listens to this hymn daily, if has been poverty-stricken will gain wealth, if has been suffering infamy will get good name and fame, if has been facing defeat will taste victory and be able to conquer enemies. It is useless to go on this way because it is insufficient to throw light on the many numerous powers granted. How many more should I enumerate, o reader? For on the surface of this earth just sipping the holy waters of this eternally winding Gomati river bestows perfections untold. .. 52 ..

वाचामीश्वरगीयमानचरितश्रीमौलिलालायिता-

म्भोजद्वन्द्वसमानपादयुगुलश्रीमाधवस्यात्मभूः ।

शब्दार्थागममञ्जुकुञ्जविलसच्छास्त्रान्तरारण्यक-

व्यासङ्गैकपरायणश्रुतिगृहाशायी सुधी केसरी ॥ ५३ ॥

श्रीसौमित्रिपुरस्थभार्गवमणिश्रीविष्णुनारायण-

च्छत्रच्छायसमाश्रितःप्रतिदिनश्रीचन्द्रकेतुः कविः ।

अन्तेवासिगणाग्र्यसङ्घपणितस्तुत्याङ्घ्रिकञ्जद्वयी

लीलाखेलतयैवगोमतिनदीस्तोत्रं व्यनेषीदितिम् ॥ ५४ ॥

बृहस्पति से गीयमान है चरित जिनका और लक्ष्मी मौलि द्वारा जिनके कमल सहस्र चरण युगल को चाहती है ऐसे श्री पंडित प्रवर माधव रामों का पुत्र-व्याकरण साहित्यरूपी जिसमें कुञ्ज है ऐसे अन्य शास्त्ररूपी अरण्य के व्यासंग में युक्त वेदरूपी गुहा में सोनेवाला विद्वत्श्रेष्ठ लखनऊ के भागों में मणि सहस्र श्रीविष्णुनारायण की छत्रछाया में आश्रित और अनेक उत्तम २ शिष्यसमूह से पूज्य जिसके चरण स्तुत्य हैं ऐसे चन्द्र केतु कवि ने विना परिश्रम के इस गोमती स्तोत्र को निर्मित किया ।

Shri Pandit Pravar Madhavram's son, who is instilled with a character akin to Brihaspati and who is touched by the pair of auspicious lotus feet of Mother Lakshmi has created this poetical literary work that follows the many edicts of grammar. Many eminent scholars of Lakshmanpur (now Lucknow) who slumber in caves produce many scientifically adapted works that explain the divine laws. From amongst them this person is a gem who has happily been enjoying the umbrella shaped aegis of Lord Vishnunarayan. This honorable dignitary who is revered by many excellent disciples and whose feet are eulogized; such a Chandra Ketu poet composed this Gomati Hymn without any effort whatsoever. .. 53-54 ..

श्रीचन्द्रकेतुकविना रचितस्तवं यः

प्रातः पठेदिह तटेऽथतदम्बुमग्नः ।

सर्वेप्सितार्थवल्लयं कलयाञ्चितश्री-

स्तस्मै दिशत्यविरतं ननु गोमतीयम् ॥ ५५ ॥

चन्द्रकेतुकवि कृत इस गोमती स्तोत्र को तट पर या जल में जो मनुष्य पढेगा उसको कलाओं से अंचित श्रीगोमती सब इप्सित समूहों को देवैगी ।

Whosoever reads this Gomati Stotra composed by the poet Chandraketu either on the shore or in the water will become well-versed in the different types of arts by the grace of Shri Gomati. .. 55 ..

मासदयं प्रतिदिनं पुलिनासनस्थ-

श्छात्रो यदि स्तवमिदं पठति प्रभाते ।

सारस्वत स्फुरति धाम किमप्यलं य

स्वान्तं प्रसादयति रञ्जयति त्रिलोकीम् ॥ ५६ ॥

यदि छात्र प्रातःकाल तट पर प्रतिदिन दो मास इस स्तोत्र को पढे, तो सब विद्यार्थियों का स्फुरण हो और संसार के सब लोग उससे प्रसन्न हों-अर्थात् वशीभूत हो ।

If a student daily at dawn for a period of two months reads this Hymn dedicated to Gomati, the student will be enlightened by the spark of knowledge, and everybody will be easily swayed by his pleasant personality. .. 56 ..

केनाप्यकथ्यशोकेन प्रेरितेन दिनात्यये ।

व्यधायि न तु पाण्डित्यदर्शनाय स्तुतिर्मया ॥ ५७ ॥

किसी अकथनीय शोक से दिन बिताने में प्रेरित मेरे द्वारा यह स्तुति बनाई गई है पाण्डित्य दिखलाने को नहीं ।

I have composed this Hymn inspired during the days of unspeakable grief and not for demonstrating my academic erudition. .. 57 ..

क्व शोकार्त मनः केदमावहित्यप्रकल्पनम् ।

तत्क्षमध्वमहो धीरा विषमे समुपस्थिते ॥ ५८ ॥

कहाँ शोकार्त मन और कहाँ चित्तैकाग्रतासाध्य कल्पना तदपि हे धीर ! विषम उपस्थिति में आप लोगों को क्षमा करना उचित है ।

Where is this sorrowful mind and where is the focus of this mind fortified with imagination? However, oh patient and courageous one, under these strange circumstances it befits you to forgive these people. ... 58 ..

मात्सर्यं समनुत्सृज्य परदोषैकदृष्टयः ।

स्मयन्तान्तेन किञ्चैते हसन्ति पितरं स्वकम् ॥ ५९ ॥

अभिमानिता को न छोड़ परके दोष देखनाही जिनकी दृष्टि का मुख्य कार्य है वह हंसें क्या वे अपने बाप को भी नहीं है हंसते ।

Holding on to their pride many people incessantly find fault in others which is their main work. Even they dare not snicker at me! For would they have the audacity to laugh at their own father? .. 59 ..

नैषावर्णिं क्वचित्पूर्वैर्महाकविभिरुत्तमा ।

गोमतीति मया दृष्टिर्न्यधायीह प्रयत्नतः ॥ ६० ॥

महाकवियों ने जो पूर्व हुए हैं इस उत्तम गोमती का वर्णन नहीं किया इससे यत्न से मैंने इस पर दृष्टि डाली है ।

Great poets in days yore have not described the excellent Gomati and my diligent attempt is to make amends for this oversight. ... 60 ..

मास्तु साहित्यसौन्दर्यवर्णनेह परं त्वियम् ।

शब्दिता गोमतीनाम्ना दिशत्यविरतं सुखम् ॥ ६१ ॥

इस स्तुति में साहित्यिक सौन्दर्य न हों परंतु गोमती नाम से कीर्ति तो यह हमेशा सुख को देती है ।

This Hymn may not have literary beauty, but the words will most certainly grant happiness in the name Gomati. ... 61 ..

इति गोमतीलहरी समाप्ता ।

Thus, endeth the Ode to Gomati

अन्वयादिकं मुल्लङ्घ्य शब्दार्थान्कानपि ध्रुवम् ।

भावावलम्बिनी टीका सैषा क्लृप्ता विशेषतः ॥ १ ॥

This syntactical work is sourced and deciphered firmly adhering to the meaning of the words and is composed specifically on the emotional commentary given.

भक्तानां पठतामेषा यदि स्वादुपकारिणी ।

गोमतीकृपया तेनोत्फलं मन्यामहे श्रयम् ॥ २ ॥


The devotee who studies these sprinkling of verses with veritable enjoyment will by the grace of Gomati revel rewardingly in the shelter provided.


इति श्रीगोमतीलहरीटीका भावावलम्बिनी समाप्ता ।

Thus, endeth the commentary of the emotion-filled Ode to Gomati

Encoded and proofread Mandar Mali

English translation by Preeti N Bhandare pnbhandare at gmail.com

——
gomatllaharI with Hindi and English Translation
pdf was typeset on November 22, 2022

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

